SJIF 2013 = 1.795
An International Peer Reviewed & Referred
Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language
SRJHSEL

साहित्यानुवाद का सैद्धांतिक पक्ष

निलकंठ गिरि , Ph.D.

Abstract

साहित्य की परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है, जो अनेक रूपों और विधाओं से होकर आयी हैं। व्युपत्ति की दृष्टि से साहित्य शब्द 'सहित' से निर्माण हुआ है। विद्वानों ने 'सहित' शब्द के दो अर्थ माने हैं– 'साथ होना' और 'हितेन सह सहितम्' अर्थात 'हित के साथ होना', 'साथ होना' आदि से विचार का सहभाव और समन्वय हो। साहित्य तभी सार्थक है जब उसके शब्द किसी अर्थ का बोध करते हो 'साहित्य' शब्द का दूसरा अर्थ हित के साथ होना' का भाव है– जिससे हित संपादन हो। 'साहित्य की सार्थकता केवल शब्द और अर्थ के उचित शब्द में ही नहीं है। उसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज हित भी होना चाहिए। जिस साहित्य में मानव–हित की भावना नहीं है, वह केवल वाग्जाल है। साहित्य, साहित्यकार के मस्तिक एवं हृदय की वह कलात्मक अभिव्यक्ति पैदा कर हमें कुछ–न–कुछ देता है। साहित्य मनुष्य को मानसिक आनंद देता है। यह अह के प्रकाशन का माध्यम है जो सामाजिक चेतना और जागृती और समाजोन्नति का काम भी करता है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com 4.194, 2013 SJIF© SRJIS2014

Introduction

साहित्य कभी निरूद्देश्य नहीं होता और केवल सस्ता मनोरंजन भी नहीं होता। साहित्य में सूचनापरकता अभिधात्मकता की अपेक्षा व्यंजकता अधिक होती है। रचनाकार शब्दों, दृश्यों आदि के माध्यम से जो प्रस्तुत करता है, उससे कई गुना अधिक अर्थात् मौन की भी भाषा होती है। अर्थात.....चिन्हों के माध्यम से भी कहता है। सर्जनात्मक साहित्य अर्थात् कविता, नाटक, कहानी आदि में इसके अनेक उदाहरण बिखरे पडे है। साहित्य मुख्यतः गद्य और पद्य में विभाजित है। इनमें प्राप्त महाकाव्य, खंडकाव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाएँ कथाप्रधान है तो काव्य, निबंध आदि भाव या विचार प्रधान है। इनकी रचना पद्धती एवं प्रस्तुति में भिन्नता के कारण इनमें उद्देश्य की भिन्नता भी आ जाती है। अतः अनूवादों में भी

भिन्नता आ जाती है। साहित्य में समय तथा अपनी संस्कृति प्रतिबिंबित रहती है। अतः स्पष्ट है कि ज्ञान विज्ञान के विषयों तथा साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में अंतर है। साहित्य के अनूवादक को मुक्त होने की छुट नहीं रहती। उस पर बहुत बड़ा दायित्व रहता है। एक ओर हम आशा करते है कि मूल के कथ्य (विचार या भाव) को ज्यों–का–त्यों अर्थात् बिना कुछ जोड़े–घटाए अनुवाद में उतार दे, तो दुसरी और हम यह भी चाहते है कि मुल की शैली भी अनुवाद की शैली से मेल खाए और तिसरी बात यह है कृति का अनुवाद न लगकर मौलिक रचना का आभास दे। या कम–से–कम मूल का भ्रम उत्पन्न करे। इस प्रकार 'साहित्य' का अनुवाद एक प्रकार से बड़ी साधना ही है।

अपने भाव, विचार अथवा संदेश को स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा से अभिव्यक्त करता ही 'अनुवाद' है। इस संदर्भ में एक मत इसप्रकार है– ''किसी एक भाषा की कृति में निहित भावों ओर विचारों को तद्नुरूप या सन्निकट अभिव्यक्ति के रूप में दुसरों भाषा में संवहन करते हुए संपन्न करना ही अनुवाद है। अनुवाद चिंतको ने अनुवाद को कला, विज्ञान, शिल्प, सृजन अथवा अनुसृजन आदि अनेक रूपों से व्याख्याहित किया है। जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वस्तुतः अनुवाद क्या है ? यह बात प्रश्नचिन्हांकित ही है। हमारे मत से अनुवाद कला, विज्ञान तथा शिल्प तीनों का समन्वय होते हुए पुनःसृजन है। डॉ. नगेंद्र ने अपने ग्रंथ 'काव्यानूवाद की समस्याएँ' में साहित्य के अनुवाद की समस्या शीर्षक के अंतर्गत साहित्य संबंधी विचार इस प्रकार व्यक्त किया है– ''जिसमें शब्द और अर्थ में सामंजस्य होता है। साहित का भाव साहित्य हैः शब्द और अर्थ जहाँ एक दूसरे के साथ संयुक्त हों। दोनों में से किसी की न्यूनता का अतिरेक या अतिरेक तब हो, ऐसे साहित्य अर्थात् सदभाव का नाम 'साहित्य' है। दोनों में से किसी का महत्व कम ना हो। दोनों का तादात्म्य को। यही एक धर्म है जो उसे संगीत और शरण से साहित्य भिन्न है क्योंकि शास्त्र में शब्द अपेक्षा अर्थ का महत्व अधिक होता है। इसी प्रकार संगीत भी काव्य से भिन्न है क्योंकि शास्त्र में शब्द की अपेक्षा अर्थ का महत्व अधिक होता है। इसी प्रकार संगीत भी काव्य से भिन्न है। संगीत में शब्द का ही महत्व है, अर्थ गौण है। इसमें एक ही शब्द को लेकर उसे अनेक रूपों में रचा जा सकता है।'' साहित्य में शब्द और अर्थ दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। विज्ञान की अपेक्षा साहित्य में शब्द और अर्थ दोनों का परस्पर तादात्मीकरण होता है। विषयवस्तू की दृष्टि से अनुवाद को दो प्रकार से विभाजन किया गया है– साहित्यिक और साहित्येतर अनुवाद। साहित्यिक अनुवाद को शैलीप्रधान अनुवाद एवं साहित्येतर को विषयप्रधान अनुवाद कहा जाता है। अनुवाद मोटे रूप से चार प्रकार का होता है– अखबारी अनूवाद, कार्यालयी अनुवाद, तकनिकी अनुवाद और साहित्यिक अनुवाद। इन चारों में से प्रथम तीन को साहित्येतर विषयों के अंतर्गत रखा जाता है। इनमें मुल सामग्री तथ्य प्रधान होती है जब कि साहित्यिक अनुवाद की मूल सामग्री में तथ्य के साथ–साथ अर्थ के स्तर पर भाव तथा अभिव्यक्ति के स्तर पर 'शैली' के दो तत्व अतिरिक्त होते हैं। जिसके कारण साहित्य का अनुवाद करना कठिन होता है। इस बात की पृष्ठ में भाषाविद् डॉ. किरण बाला के अनुसार– ''तथ्यप्रधान सामग्री का अनुवाद करना अपेक्षाकृत सरल होता है, भावयुक्त सामग्री का अनुवाद करना क्योंकि हर भाषा के शैलीय साधन समान नहीं होते।''

साहित्य की भाषा काव्यात्मक तथा आलंकारिक होती है। अतः साहित्यिक अनुवाद में अलंकारिता शैली की समस्या प्रबल रूप से दिखाई देती है। किसी तथ्य, घटना या चरित्र की प्रभावपूर्ण तथा सुंदर अभिव्यक्ति के लिए आलंकारों का प्रयोग किया जाता है। सामान्य बात भी आलंकारों की सहायता से प्रभावी रूप से कह सकते हैं। वही शैली अनुवादक के लिए कठिनाई पैदा करती है। साहित्य में आँचलिकता भी महत्वपूर्ण होती है। अतः उसके अनुवाद में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। 'आँचल' से तात्पर्य – ''कोई विशिष्ट भू–प्रदेश या भु–भाग और आँचलिकता से तात्पर्य किसी विशिष्ट भु–भाग की वे सारी विशेषताएँ जो उस सीमित भु–भाग या भु–प्रदेश में ही मिलती हैं। उसे छोड़कर दुसरे भु–भाग में उनका मिलना संभव नहीं है। स्त्रोत भाषा की आँचलिकता के भाषा में समान संप्रेषण अत्यंत कष्ट साध्य होता है। इसमें मूल स्थानिय रंग को लाना कठिन होता है। वहॉ की रूढ़ी–परंपराएँ, स्थान–पान, तीज–त्योहार, श्रृद्धा, विश्वास, देवी–देवता, लोक जीवन, लोक–संस्कृति, लोकभाषा आदि विषयक अपनी अलग–अलग विशेषताएँ होती है जा समान में अन्यत्र नहीं मिलती। इन विशेषताओं को अनुवाद में लाना अत्यंत जटिल और मुश्किल–सा होता है। इसमें पुन–सृजन आवश्यक है। अतः अनुवादक में इसके लिए सहज प्रतिभा एवं रूचि के परिष्करण के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, पौराणिक आदि का पर्याप्त ज्ञान तथा समृद्ध शब्दभंडार भी अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रंथ

अनुवाद सिद्धांत की समस्याएँ – संपा. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

अनुवाद कला – डॉ. विश्वनाथ अय्यर

अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलनाथ तिवारी

अनुवाद–मूल्य और मूल्यांकरन – डॉ. राशी मुदीराज